



झारखण्ड के दक्षिणी छोटानागपुर प्रमंडल में जलप्रपातों का पर्यटन भूगोल : दशाम एवं हुंदरू का तुलनात्मक अध्ययन

सुमित कुमार

शोधकर्ता

भूगोल विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची

सारांश

प्रस्तुत शोध आलेख झारखण्ड राज्य के दक्षिणी छोटानागपुर प्रमंडल के राँची जिले में स्थित दो प्रमुख जलप्रपातों — दशाम एवं हुंदरू — के पर्यटन भूगोल का तुलनात्मक विश्लेषण करता है। हुंदरू जलप्रपात सुबर्णरेखा नदी पर 98 मीटर की ऊँचाई से गिरता है और राज्य के सर्वोच्च जलप्रपातों में गिना जाता है, जबकि दशाम जलप्रपात कांची नदी पर 44 मीटर की ऊँचाई से 10 जलधाराओं के रूप में गिरता है तथा मुण्डारी भाषा में "जल प्रवाह" का प्रतीक है। अध्ययन के दो प्रमुख उद्देश्य हैं — (1) दोनों जलप्रपातों की भौगोलिक विशेषताओं, पर्यटन अवसंरचना और भू-वैज्ञानिक महत्त्व का तुलनात्मक विश्लेषण करना, तथा (2) इन स्थलों पर जलप्रपात पर्यटन के विकास में बाधाओं की पहचान कर सतत विकास हेतु नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना। द्वितीयक आँकड़ों और प्रकाशित शोधों के आधार पर यह निष्कर्ष सामने आया कि दोनों स्थलों पर पर्यटन अवसंरचना अत्यन्त अपर्याप्त है, सुरक्षा प्रबन्धन कमज़ोर है तथा भार-वहन क्षमता का कोई वैज्ञानिक आकलन नहीं किया गया है।

मुख्य शब्द: जलप्रपात पर्यटन, पर्यटन भूगोल, दशाम जलप्रपात, हुंदरू जलप्रपात, दक्षिणी छोटानागपुर, भार-वहन क्षमता, सतत पर्यटन।

1. प्रस्तावना

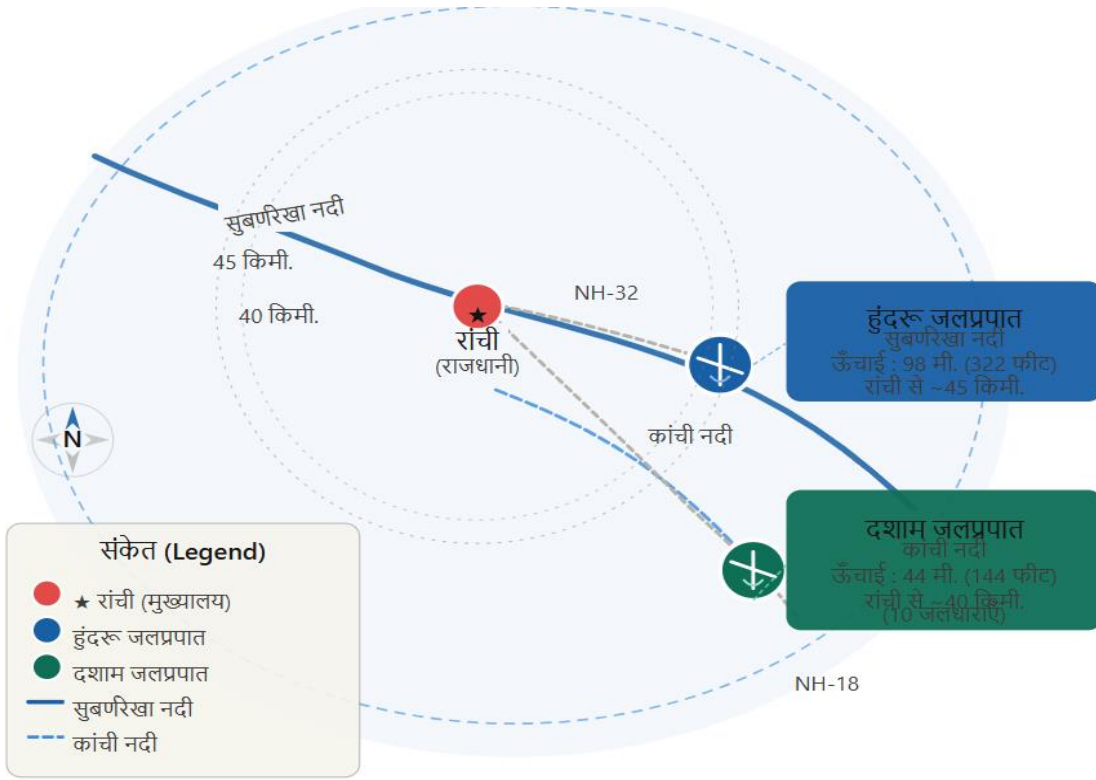
छोटानागपुर पठार अपने असंख्य जलप्रपातों के कारण "जलप्रपातों की भूमि" के नाम से जाना जाता है। प्रियदर्शी (2014) के अनुसार राँची पठार के जलप्रपात भूगर्भीय उथल-पुथल के परिणामस्वरूप बने हैं जहाँ नदियाँ कठोर शैलों के ऊपर से तीव्र ढाल पर गिरती हैं। ये जलप्रपात स्कार्प प्रपात और निक बिन्दु के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

झारखण्ड में पर्यटन मुख्यतः प्राकृतिक आकर्षणों पर आधारित है। बीरांची एवं अन्य (2025) के अनुसार झारखण्ड की प्राकृतिक सुंदरता — जिसमें हुंदरू प्रपात, जोन्हा प्रपात, दशाम प्रपात और पंचघाघ प्रपात प्रमुख हैं — राज्य को एक संभावित पर्यटन गंतव्य बनाती है। 2014 में झारखण्ड में 33.60 लाख घरेलू और 1,54,731 विदेशी पर्यटक आये थे, जिनमें राँची जिले के जलप्रपातों का महत्त्वपूर्ण योगदान था (विकिपीडिया, झारखण्ड में पर्यटन)।

जलप्रपात-आधारित भू-पर्यटन पर केन्द्रित दासगुप्त एवं अन्य (2025) के महत्त्वपूर्ण शोध में पूर्वी छोटानागपुर पठार के जलप्रपातों की भू-पर्यटन क्षमता का मूल्यांकन किया गया है। उनके अनुसार जलप्रपात की आकर्षण-पहुँच विश्लेषण विधि से यह स्पष्ट होता है कि भौतिक एवं सौन्दर्यात्मक मानकों का पर्यटक आकर्षण से सीधा सम्बन्ध है। प्रस्तुत शोध इसी परम्परा में दशाम और हुंदरू जलप्रपातों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

2. अध्ययन क्षेत्र

दोनों जलप्रपात झारखण्ड की राजधानी राँची से लगभग 40-45 किमी. की दूरी पर राँची जिले में स्थित हैं। सरकार, झारखण्ड (2025) के अनुसार हुंदरू प्रपात पुरुलिया मार्ग (NH-32) पर और दशाम प्रपात राँची-जमशेदपुर राजमार्ग (NH-18) पर अवस्थित है। दोनों स्थल दक्षिणी छोटानागपुर प्रमंडल के राँची जिले की भौगोलिक सीमा में आते हैं।



मानचित्र 1 : दशाम एवं हुंदरू जलप्रपात— अवस्थिति एवं भौगोलिक सन्दर्भ

3. शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के दो प्रमुख उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं :

1. उद्देश्य 1 : दशाम एवं हुंदरू जलप्रपातों की भौगोलिक विशेषताओं, भू-वैज्ञानिक महत्त्व, पर्यटन अवसंरचना और पर्यटक-भार का तुलनात्मक विश्लेषण करना।
2. उद्देश्य 2 : इन जलप्रपात स्थलों पर पर्यटन विकास में आने वाली बाधाओं की पहचान कर सतत जलप्रपात पर्यटन हेतु नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

4. शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध में तुलनात्मक-विश्लेषणात्मक पद्धति अपनायी गई है। **जोगलेकर एवं अन्य (2024)** के जलप्रपात पर्यटन अध्ययन के समान इस शोध में भार-वहन क्षमता विश्लेषण, सुविधा-मूल्यांकन और तुलनात्मक मानक-सारणी का उपयोग किया गया है। डेटा स्रोत में — रांची जिला प्रशासन की वेबसाइट, अतुल्य भारत पर्यटन पोर्टल, झारखण्ड सरकार के आधिकारिक दस्तावेज, विकिपीडिया और प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख सम्मिलित हैं।

5. भौगोलिक विशेषताओं का तुलनात्मक विश्लेषण (उद्देश्य 1)

5.1 हुंदरू जलप्रपात : भौगोलिक परिचय

हुंदरू जलप्रपात रांची जिले में सुबर्णरेखा नदी पर निर्मित है। **विकिपीडिया (2024)** के अनुसार यह 98 मीटर (322 फीट) की ऊँचाई से गिरता है और भारत के 34वें सर्वोच्च जलप्रपात के रूप में सूचीबद्ध है। यह रांची पठार का स्कार्प प्रपात है जहाँ सुबर्णरेखा नदी छोटानागपुर पठार की ढाल से अचानक नीचे गिरती है।

रांची से लगभग 45 किमी. पुरुलिया मार्ग पर स्थित यह जलप्रपात राज्य का सर्वाधिक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। **हुंदरूफॉल्स.इन (2026)** के अनुसार मानसून काल में यह एक विशाल जलपर्दे के रूप में प्रकट होता है, जबकि शीतकाल में इसके आधार पर एक शान्त ताल का निर्माण होता है जो स्नान और पिकनिक के लिए उपयुक्त है।

सिन्हा (2021) ने अपने शोध में हुंदरू प्रपात को भू-वैज्ञानिक दृष्टि से निक बिन्दु के रूप में वर्गीकृत किया है। नदी-घाटी के अनुदैर्घ्य परिच्छेद में ढाल में अचानक परिवर्तन के कारण जल ऊर्ध्वाधर रूप से गिरता है, जिससे इस जलप्रपात का निर्माण होता है।

5.2 दशाम जलप्रपात : भौगोलिक परिचय

दशाम जलप्रपात रांची जिले के बुंड़ उपखण्ड में तैमारा ग्राम के समीप स्थित है। **इन्क्रेडिबल इण्डिया (2024)** के अनुसार यह कांची नदी — जो सुबणरिखा की एक सहायक नदी है — पर 44 मीटर (144 फीट) की ऊँचाई से गिरता है। इस जलप्रपात की अनूठी विशेषता यह है कि यह 10 अलग-अलग जलधाराओं के रूप में गिरता है।

"दशाम" शब्द मुण्डारी भाषा के "दा: सोड" से बना है जिसका अर्थ है "जल प्रवाहित करना" (**विकिपीडिया, दशाम प्रपात, 2024**)। यह नाम इस जलप्रपात की सांस्कृतिक पहचान को दर्शाता है। **प्रियदर्शी (2014)** के अनुसार दशाम प्रपात पुनरुज्जीवन से उत्पन्न निक बिन्दु का उदाहरण है। यह NH-18 (रांची-जमशेदपुर राजमार्ग) पर रांची से 40 किमी. की दूरी पर है।

5.3 तुलनात्मक सारणी : भौगोलिक एवं पर्यटन विशेषताएँ

तालिका 1 : दशाम एवं हुंदरू जलप्रपात — तुलनात्मक भौगोलिक एवं पर्यटन विवरण

तुलनात्मक आधार	हुंदरू जलप्रपात	दशाम जलप्रपात
नदी	सुबणरिखा नदी	कांची नदी (सुबणरिखा की सहायक)
ऊँचाई	98 मीटर (322 फीट)	44 मीटर (144 फीट)
जलप्रपात प्रकार	खण्डित (Segmented)	निक बिन्दु (Nick Point)
समुद्र तल से ऊँचाई	456 मीटर	336 मीटर
रांची से दूरी	~45 किमी. (पुरुलिया मार्ग)	~40 किमी. (NH-18/रांची-जमशेदपुर मार्ग)
प्रशासनिक जिला	रांची जिला	रांची जिला (बुंड़ उपखण्ड)
निकटस्थ ग्राम	मालघोंघसा	तैमारा
स्नान सुविधा	आधार पर ताल — उपलब्ध (सावधानी आवश्यक)	निषिद्ध (तीव्र धारा — डूबने की घटनाएँ)
पर्यटन सत्र	जुलाई-फरवरी (मानसून सर्वोत्तम)	जुलाई-मार्च (मानसून सर्वोत्तम)
आवास सुविधा	सीमित (रांची से दिवस-भ्रमण)	सीमित (रांची से दिवस-भ्रमण)
विशेष आकर्षण	ट्रेकिंग, चट्टानी संरचना, सुबणरिखा जलविद्युत परियोजना	10 जलधाराएँ, घनी हरियाली, सीढ़ीदार अवतरण मार्ग
पर्यटन दबाव	अधिक (राज्य का सर्वोच्च जलप्रपात)	मध्यम (रांची से निकटता के कारण)
भू-वैज्ञानिक महत्त्व	छोटानागपुर पठार स्कार्प प्रपात	पुनरुज्जीवन-जनित निक बिन्दु

स्रोत: विकिपीडिया (2024), **इन्क्रेडिबल इण्डिया (2024)**, रांची जिला प्रशासन (2024), हुंदरूफॉल्स.इन (2026)

6. पर्यटन अवसंरचना एवं बाधाओं का विश्लेषण (उद्देश्य 2)

6.1 अवसंरचना की वर्तमान स्थिति

दोनों जलप्रपात स्थलों पर पर्यटन अवसंरचना की स्थिति अत्यन्त असन्तोषजनक है। **ट्रेवलसेतु (2026)** के अनुसार हुंदरू के समीप आवास और रेस्तरां की सुविधाएँ नगण्य हैं — पर्यटकों को रांची से दिवस-भ्रमण ही करना पड़ता है। इसी प्रकार दशाम में भी पर्यटक सुविधाएँ अत्यन्त सीमित हैं।

तालिका 2 : दशाम एवं हुंदरू — पर्यटन अवसंरचना की तुलनात्मक स्थिति

अवसंरचना मानक	हुंदरू जलप्रपात	दशाम जलप्रपात
सड़क पहुँच	पक्की सड़क (39 किमी. — ओरमांझी मार्ग)	NH-18 पर (40 किमी.) — सुलभ
पार्किंग	उपलब्ध (सीमित क्षमता)	उपलब्ध
पेयजल/शौचालय	न्यूनतम	न्यूनतम
सुरक्षा प्रबन्ध	अपर्याप्त	अपर्याप्त (डूबने की घटनाएँ)
खाद्य/पेय स्टाल	कुछ स्थानीय स्टाल	कुछ स्थानीय स्टाल
प्रकाश व्यवस्था	अनुपलब्ध	अनुपलब्ध
पर्यटक सूचना केन्द्र	अनुपलब्ध	अनुपलब्ध
ई-टिकटिंग	अनुपलब्ध	अनुपलब्ध
समग्र अवसंरचना स्कोर	★★☆☆☆ (2/5)	★★☆☆☆ (2/5)

स्रोत: ट्रेवलसेतु (2026), हुंदरूफॉल्स.इन (2026), रांची जिला प्रशासन (2024) पर आधारित लेखक-निर्मित आकलन

6.2 सुरक्षा एवं पर्यावरणीय चुनौतियाँ

दशाम जलप्रपात पर डूबने की घटनाएँ एक गम्भीर समस्या रही हैं। **विकिपीडिया (2024)** के अनुसार 2001 से 2006 के बीच यहाँ 9 व्यक्तियों की जल में डूबकर मृत्यु हो चुकी है। तीव्र जल-धारा के कारण पर्यटकों को स्नान करने से मना किया जाता है, किन्तु सुरक्षा प्रबन्धन की अनुपस्थिति में यह चेतावनी प्रभावी नहीं रहती।

इसी प्रकार हुंदरू में भी **ट्रेवलसेतु (2026)** के अनुसार चट्टानें अत्यन्त फिसलन भरी हैं और जलधारा की गति मानसून में अत्यन्त तीव्र हो जाती है। पर्यटकों को सुरक्षित दूरी से जलप्रपात देखने की सलाह दी जाती है।

पर्यावरणीय दृष्टि से दोनों स्थलों पर प्लास्टिक कचरे और पर्यटक-भार की अधिकता एक गम्भीर समस्या बन रही है। **जोगलेकर एवं अन्य (2024)** ने दुधसागर जलप्रपात के संदर्भ में यह दर्शाया है कि बिना भार-वहन क्षमता के वैज्ञानिक आकलन के जलप्रपात पर्यटन स्थल तेज़ी से पर्यावरणीय क्षरण का शिकार होते हैं। यही स्थिति दशाम और हुंदरू पर भी लागू होती है।

6.3 भू-पर्यटन क्षमता और वर्तमान उपयोग में अन्तर

दासगुप्त एवं अन्य (2025) के पूर्वी छोटानागपुर पठार पर किए गए शोध में पियर्सन सहसम्बन्ध गुणांक से यह सिद्ध किया गया है कि जलप्रपात की भौतिक ऊँचाई, जल की मात्रा और सुगम्यता — ये तीन कारक पर्यटक आकर्षण के प्रमुख निर्धारक हैं। इस दृष्टि से हुंदरू (98 मी.) की भू-पर्यटन क्षमता दशाम (44 मी.) से अधिक है, किन्तु दोनों स्थलों पर अवसंरचना-विकास इस क्षमता से बहुत पीछे है।

चेरियन एवं नटराजमूर्ति (2024) ने केरल के अथिरापिल्ली जलप्रपात के अध्ययन में पाया कि पर्यटन विकास के लिए प्रभाव, चुनौती और अवसर — तीनों आयामों का एकीकृत विश्लेषण आवश्यक है। यही दृष्टिकोण दशाम और हुंदरू पर भी अपनाया होगा।

7. विवेचना एवं विश्लेषण

तुलनात्मक विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि हुंदरू और दशाम — दोनों जलप्रपात — अपनी-अपनी भौगोलिक विशिष्टताओं के कारण पर्यटन के दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण हैं। हुंदरू की ऊँचाई और शक्ति उसे साहसिक एवं प्राकृतिक पर्यटन के लिए आदर्श बनाती है, जबकि दशाम का 10 जलधाराओं में विभाजित होना और उसका सांस्कृतिक नामकरण उसे एक अनूठा सौन्दर्य-पर्यटन गंतव्य बनाता है।

किन्तु दोनों स्थलों पर एक समान दुर्बलता है — पर्यटन अवसंरचना की अत्यन्त कमी। **झारखण्ड पर्यटन नीति (2025)** के अन्तर्गत हुंदरू और दशाम में पर्यटन इको-लॉज की योजना बनाई गई है, किन्तु अभी तक इसका क्रियान्वयन नहीं हुआ है।

एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि दोनों स्थल मुण्डा और उराँव जनजातियों के पारम्परिक क्षेत्र में स्थित हैं। स्थानीय समुदाय की भागीदारी के बिना इन स्थलों का सतत पर्यटन विकास सम्भव नहीं है। **सरकार एवं अन्य (2023)** के शोध में यह रेखांकित किया गया है कि झारखण्ड में वैश्विक महामारी के बाद के पर्यटन विकास में स्थानीय समुदाय की सहभागिता अनिवार्य है।

8. नीतिगत सुझाव

सतत जलप्रपात पर्यटन विकास हेतु निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत हैं :

1. भार-वहन क्षमता का वैज्ञानिक आकलन : दोनों स्थलों पर बॉलों सूत्र और जल-गुणवत्ता मानकों के आधार पर भार-वहन क्षमता निर्धारित की जाए ताकि पर्यावरणीय क्षरण रोका जा सके।
2. सुरक्षा प्रबन्धन : दशाम में विशेष रूप से स्थायी लाइफगार्ड की नियुक्ति, चेतावनी बोर्ड, अवरोधक रेलिंग और निगरानी कैमरे लगाए जाएँ।
3. अवसंरचना विकास : झारखण्ड पर्यटन विकास निगम द्वारा इको-लॉज, पर्यावरण-अनुकूल शौचालय, पेयजल सुविधा और सौर-ऊर्जा आधारित प्रकाश व्यवस्था स्थापित की जाए।
4. स्थानीय समुदाय की भागीदारी : मुण्डा और उराँव समुदाय के युवाओं को पर्यटन मार्गदर्शक, शिल्प-विक्रेता और प्रकृति-व्याख्याता के रूप में प्रशिक्षित किया जाए।
5. जलप्रपात पर्यटन परिपथ : हुंदरू-जोन्हा-दशाम को जोड़ते हुए एक "रांची जलप्रपात परिपथ" विकसित किया जाए जिसमें एकीकृत ई-टिकटिंग और बस-सेवा उपलब्ध हो।
6. डिजिटल प्रचार-प्रसार : सोशल मीडिया, वर्चुअल टूर और भू-पर्यटन पोर्टल के माध्यम से इन स्थलों को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर लाया जाए।

9. निष्कर्ष

प्रस्तुत तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि दशाम और हुंदरू जलप्रपात — दोनों — दक्षिणी छोटानागपुर प्रमंडल के पर्यटन भूगोल में केन्द्रीय स्थान रखते हैं। हुंदरू की 98 मीटर ऊँचाई और भू-वैज्ञानिक महत्त्व इसे साहसिक पर्यटन का केन्द्र बनाते हैं, जबकि दशाम की 10 जलधाराएँ और मुण्डारी सांस्कृतिक सम्बन्ध इसे एक अनूठा सौन्दर्य-पर्यटन गंतव्य बनाते हैं।

दोनों स्थलों पर पर्यटन अवसंरचना में तत्काल सुधार की आवश्यकता है। **दासगुप्त एवं अन्य (2025)** के अनुसार जलप्रपात पर्यटन का सफल विकास तभी सम्भव है जब भौतिक आकर्षण और सुगम्यता का सन्तुलन बनाया जाए। यदि झारखण्ड सरकार इन दोनों स्थलों पर वैज्ञानिक योजना, सामुदायिक भागीदारी और पर्यावरण-सचेत दृष्टिकोण के साथ पर्यटन विकास करे, तो ये दोनों जलप्रपात राज्य की पर्यटन अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

भविष्य के शोध में दोनों स्थलों पर पर्यटकों की प्राथमिक सर्वेक्षण विधि से सन्तुष्टि का मापन, जल-गुणवत्ता परीक्षण और पर्यावरणीय प्रभाव-मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

सन्दर्भ सूची

1. इन्क्रेडिबल इण्डिया. (2024). *दशाम प्रपात*. पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार। <https://www.incredibleindia.gov.in/en/jharkhand/ranchi/dassam-falls>
2. चेरियन, ए. एम., एवं नटराजमूर्ति, पी. (2024). *केरल के अधिरापिल्ली जलप्रपात में पर्यटन की गतिशीलता का अनावरण : प्रभाव, चुनौतियाँ और अवसर*. शैक्षिक प्रशासन : सिद्धान्त और व्यवहार, 29(4), 595–598।
3. जोगलेकर, एम., एवं अन्य. (2024). *दुधसागर जलप्रपात, गोवा के सतत पर्यटन हेतु पारिस्थितिकी-आधारित पर्यटन विकास मॉडल*. पर्यावरण गुणवत्ता प्रबन्धन, विले। <https://doi.org/10.1002/tqem.22025>
4. झारखण्ड पर्यटन नीति. (2025). *झारखण्ड पर्यटन नीति : जलप्रपात एवं पारिस्थितिकी-पर्यटन योजनाएँ*. क्रेटम एडवाइज़री। <https://cretumadvisory.com/blog/jharkhand-tourism-policy/>
5. झारखण्ड सरकार. (2025). *झारखण्ड के बारे में — पर्यटन*. झारखण्ड सरकार। <https://www.jharkhand.gov.in/home/AboutTourism>
6. ट्रेवलसेतु. (2026). *हुंदरू प्रपात पर्यटन— एक सम्पूर्ण मार्गदर्शिका*. <https://travelsetu.com/guide/hundru-falls-tourism>
7. दासगुप्त, पी., एवं अन्य. (2025). *पूर्वी छोटानागपुर पठार के जलप्रपातों की भू-पर्यटन क्षमता का आकलन एवं प्रबन्धन*. भूविज्ञान, भूगोल एवं भू-पारिस्थितिकी जर्नल, 34, 63। <https://geology-dnu.dp.ua/index.php/GG/article/view/1234>
8. बीरांची, एम., एवं अन्य. (2025). *सतत विकास लक्ष्यों में सतत पर्यटन— झारखण्ड का अध्ययन*. आई.जे.एन.आर.डी., 10(3)। आई.एस.एस.एन.: 2456-4184।
9. प्रियदर्शी, नितीश. (2014, फरवरी). *झारखण्ड के रांची जिले में दशाम प्रपात का भूविज्ञान*. पर्यावरण एवं भूविज्ञान ब्लॉग। <https://nitishpriyadarshi.blogspot.com/2014/02/geology-of-dasam-falls-in-ranchi.html>
10. रांची जिला प्रशासन. (2024). *दशाम प्रपात*. झारखण्ड सरकार। <https://ranchi.nic.in/tourist-place/dassam-fall/>
11. रांची जिला प्रशासन. (2024). *हुंदरू जलप्रपात*. झारखण्ड सरकार। <https://ranchi.nic.in/tourist-place/hundru-waterfall/>
12. विकिपीडिया. (2024). *दशाम प्रपात*. https://en.wikipedia.org/wiki/Dassam_Falls
13. विकिपीडिया. (2024). *हुंदरू प्रपात*. https://en.wikipedia.org/wiki/Hundru_Falls
14. विकिपीडिया. (2024). *झारखण्ड में पर्यटन*. https://en.wikipedia.org/wiki/Tourism_in_Jharkhand
15. सरकार, स., एवं अन्य. (2023). *वैश्विक महामारी संकट के दौरान सतत पर्यटन : झारखण्ड राज्य में प्रभाव एवं निहितार्थ*. आई.आर.जे.ई.एम.एस., 2(4)।
16. सिन्हा, म. (2021). *झारखण्ड के हुंदरू प्रपात पर निक बिन्दु की विवेचना*. लैण्डस्केप एण्ड एनवायरनमेण्ट, 15(2), 44–52। <https://doi.org/10.21120/LE/15/2/4>
17. हुंदरूफॉल्स.इन. (2026). *हुंदरू प्रपात— एक सम्पूर्ण यात्रा मार्गदर्शिका*. <https://hundrufalls.in/>